Maharashtra:		
Kuhi, Nagpur district	:	2,500,000 tonnes with 0.1 to 0.197% WO 3
Khobna, Nagpur district	:	4,820,000 tonnes with 0.24% WO 3
Agargaon, Nagpur district	:	2,230,000 tonnes with 0.04—0.27% WO 3
Ranbori, Nagpur district	:	2,530,000 tonnes with 0.176% WO 3
Bhanori, Nagpur district	:	2,63,000 tonnes with 0.253% WO 3
Karnataka:		
66-KGF prospect, Kolar district	:	2,66,880 tonnes with 0.073—0.5% WO 3
Hutti prospect, Raichur district	:	1,02,863 tonnes with 0.13% WO 3
Tamil Nadu:		
Kamballipatti, Madurai district	:	2,50,000 tonnes with 0.13% WO 3
Haryana:		
Tosham, Bhiwani district	:	2,230,000 tonnes with 0.16% WO 3
Andhra Pradesh:		
Burugubanda-Chinnagalikonda, Tapaskonda, Etipalle block East Godavari district	:	Prospect is not promising.
West Bengal:		
Chhandapathar, Porapahar areas, Bankura district.	:	Prospect is not promising.
Madhya Pradesh:		
Chunalomn prospect, Betul district	:	Prospect is not promising.

(Source DID on tungsten, GSI, 1994).

कुल्लू जिले में मनीकर्ण में भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा कोल्डस्टोर का निर्माण

534. **श्री महेश्वर सिंह:** क्या **खान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने हिमाचल प्रदेश राज्य के कुल्लू जिले में स्थित मनीकर्ण में वहां से निकलने वाले गर्म पानी के आधार पर कोल्डस्टोर बनाने पर काफी धन व्यय किया है;

(ख) यदि हां, तो यह निर्णय कब लिया गया और कोल्डस्टोर के निर्माण पर कुल कितना धन खर्च हुआ; और

(ग) क्या इस कोल्डस्टोर को अब उपयोग में लाया जा रहा है?

इस्पात मंत्री तथा खान मंत्री (श्री बीरेन्द्र प्रसाद वैश्य): (क) और (ख) कुल्लू जिले में मणिकर्ण में कोल्डस्टोर संयंत्र के निर्माण में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली, गैर पारम्परिक ऊर्जा विभाग (डी०एन०ई०एस०) और के०लो०नि०वि० के साथ-साथ भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने भी सहयोग दिया था। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने विद्युत उत्पन्न करने के लिए भूतापीय संभाव्यता का मूल्यांकन करने और कोल्डस्टोर संयंत्र की स्थापना जैसे अवैद्युत प्रयोग के लिए वर्ष 1974 में भूतापीय अन्वेषण किया। कोल्डस्टोर संयंत्र के निर्माण के प्रस्ताव को डी०एस०टी० द्वारा अनुमोदन प्रदान किया गया और तत्पश्चात् वर्ष 1980 में डी०एन०ई०एस० द्वारा इस कार्य का निष्पादन किया गया। इसकी कुल अनुमानित लागत लगभग 10.60 लाख रु० थी जिसे अनुदान राशि के तौर पर डी०एन०ई०एस० द्वारा संस्वीकृत किया गया। प्रयोगिक संयंत्र का डिजाइन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान नई दिल्ली ने किया था तथा भवन का निर्माण के०लो०नि०वि० ने किया था। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण केवल समन्वय एजेंसी थी।

(ग) वर्ष 1985 में निरीक्षण के दौरान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली ने यह पाया कि भवन में दरारें पड़ गई हैं, अतः कोल्डस्टोर का प्रयोग नहीं किया जा सका।